

द्रव्य भावभेद

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

द्रव्य और भाव दो शब्द हैं। द्रव्य इन्द्रियों से दिखाई देता है किन्तु भाव दिखाई नहीं देता। भाव भीतर का विषय है। द्रव्य बाहर का विषय है। भाव कौन पढ़ सकता है? मतिज्ञान के द्वारा भाव जाना जाता है। इससे मन, बुद्धि, वचन, कर्म कर्ता है। इससे हम समाज से जुड़े रहते हैं। दूसरा श्रुतज्ञान है। हम स्वाध्याय करते हैं, आगमों का अध्ययन करते हैं। मन चित्त से सम्बन्धित होता है। श्रुतज्ञान दूसरों के लिए है। किसी ज्ञानी पुरुष की बात सुनकर जीवन को नई दिशा देते हैं तो यह श्रुतज्ञान से सम्बन्धित होता है। श्रुतज्ञान परोपकारी है। मतिज्ञान व्यक्तिगत होता है। अवधिज्ञान आत्मा का गुण है। आत्मा स्वयं ज्ञान कर लेता है। ज्ञान के आवरण हटने से ज्ञान वृहद् हो जाता है। आत्मा अनन्त ज्ञान का भण्डार है। साक्षात् पुद्गलों को देखने लगता है तो बाह्य वस्तुओं के गुण-दोषों को भी जान लेता है। बाह्य साधना की आवश्यकता होती है किन्तु दूर देश में क्या हो रहा है इस बात को अवधिज्ञानी देख लेता है। धृतराष्ट्र को विदूर ने अपने अवधिज्ञान से महाभारत के युद्ध में घटने वाली घटनाओं का साक्षात्कार करवा दिया था। व्यक्ति के भीतर क्या विचार चल रहा है मनःपर्यव ज्ञानी उसे जान लेता है। आत्मा से आवरण हट जाने पर केवलज्ञान हो जाता है। केवलज्ञान ज्ञान की सबसे ऊँची अवस्था है। भगवान महावीर ने केवलज्ञान के द्वारा प्रत्यक्ष कर लिया था। भाव और द्रव्य का भेद होना आवश्यक है।

गीता में कहा गया है कि मनुष्य के मन में सदैव भाव आते रहते हैं और जाते रहते हैं। जैसा भाव आता है वैसे विचार भी बन जाता है। भाव का अर्थ है— हमारे भीतर आने-जाने वाले विचार। हमारा चिन्तन कैसा है? यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमारे भीतर के विचार कैसे हैं? कर्म करने के पूर्व भाव या विचार मन में आता है। योजना भीतर बनती है निष्पत्ति बाहर आती है। भाव को समझने के लिए विचारों की गंगोत्री में जाना पड़ेगा। भगवान शंकर

की जटा से गंगा पृथ्वी पर आयी है। पापियों के पाप को गंगा का निर्मल जल प्रक्षालित कर देता है। शुद्ध होने के लिए भाव की गंगोत्री में जाना पड़ेगा।

भाव दो तरह के होते हैं – शुद्ध भाव और अशुद्ध भाव। शुद्ध भाव विधायक चिन्तर करना है। अशुद्ध भाव नकारात्मक चिन्तन है। भावों का सम्बन्ध लेश्याओं से हैं। लेश्याएं छः प्रकार की हैं। लेश्याध्यान में दो शब्द हैं— लेश्या और ध्यान। लेश्या का अर्थ है रंग और ध्यान का अर्थ है मन की एकाग्रता। शरीर के विभिन्न अवयवों पर रंगों के प्रयोग के द्वारा शरीर को स्वस्थ रखने की प्रक्रिया को लेश्याध्यान कहते हैं। लेश्याध्यान रंगों का ध्यान है। माना जाता है कि जैसे लेश्या के रंग होते हैं वैसा ही व्यक्ति का आभामंडल बनता है। लेश्या अच्छी तथा बुरी दोनों ही प्रकार की होती है। आभामंडल शरीर के चारों ओर सूक्ष्म वलय होता है जिसे सामान्य आंखों से नहीं देखा जा सकता है। लेश्याध्यान में रंगों के द्वारा बुरी लेश्या को अच्छी लेश्या में बदला जा सकता है जिससे आभामंडल भी शुद्ध हो जाता है। लेश्याध्यान भाव शुद्धि का प्रयोग है। भाव ही व्यक्ति के व्यवहार का आदि स्रोत है। अतः भाव—शुद्ध होने पर व्यवहार भी शुद्ध होता है।

लेश्याध्यान के प्रयोग में संबंधित रंग को चमकता हुआ आभामंडल में काल्पनिक रूप से देखते हैं। तत्पश्चात् इसे श्वास के साथ शरीर के भीतर लेते हैं। जिस केन्द्र से रंग का सम्बन्ध होता है, उस केन्द्र से अमुख रंग के प्रकाश को आभामंडल में फैलाता हुआ देखते हैं। इसके बाद भावना की जाती है। लेश्याध्यान में प्रमुख पांच केन्द्र तथा उनके पांच रंग निर्दिष्ट किये गये हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से लेश्याध्यान का प्रयोग भाव—शुद्धि का प्रयोग है। वैज्ञानिक दृष्टि से प्रत्येक रंग की अपनी तरंग दैर्घ्यता होती है तथा प्रत्येक रंग की अपनी प्रकृति होती है। ये तत्व व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। इससे क्रमशः भावधारा की निर्मलता, वासनाओं का अनुशासन, अन्तर्दृष्टि का जागरण— आनन्द का जागरण, ज्ञान तन्तु की सक्रियता और परमशान्ति, क्रोध, आवेग, आवेश, उत्तेजनाओं की शांति होती है। इस प्रकार लेश्याध्यान रंगों के ध्यान के माध्यम से शरीर को स्वस्थ बनाता है।

आज के जीवन में ध्यान बहुत आवश्यक है। शरीर को जितना भोजन की आवश्यकता होती है उससे कहीं अधिक ध्यान की आवश्यकता है। प्रदूषण भरे माहौल में जीने के लिए ध्यान की महती भूमिका है। शोर और प्रदूषण के माहौल के चलते व्यक्ति निरर्थक ही तनाव और मानसिक थकान का अनुभव करता रहता है। लेश्या का पौद्गलिक एवं चैतसिक पक्ष व्यक्तित्व पर प्रभाव छोड़ता है। लेश्या जीवन को रूपांतरण दे सकती है।

भाव और भव में मकड़ी और उसके जालों का सम्बन्ध है। मकड़ी स्वयं जाला बुनती है और उसी में स्वयं फंसी रहती है, दूसरे जीवों को भी उसी में फंसाये रहती है। हमारे भावों का सम्बन्ध भी ऐसा ही है। हम अपने विचारों से ही बंधे रहते हैं और संसार की सृष्टि कर लेते हैं। हमें संसार में बांधने वाला कोई नहीं केवल भाव ही बन्धन के कारण होते हैं। आत्मा तीनों कालों में एक जैसी रहती है। भूतकाल में जो भाव हमने लाये हैं वर्तमान में वैसा ही घटित होगा। यदि भूतकाल के भाव अच्छे हैं तो वर्तमान में भव भी अच्छा ही रहेगा। यदि भाव ही बुरे हैं तो भव भी बुरा ही होगा।